'नाखून क्यों बढ़ते हैं' का केंद्रीय भाव।

हिन्दी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, पत्र- 4

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक वैचारिक निबंध है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद हिंदी निबंध को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य में चिंतनपरक निबंध, वैचारिक निबंध, ललित निबंध, सभी का स्वरूप आचार्य द्विवेदी के निबंधों में पाया जा सकता है। भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए पहलुओं को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जिस कलात्मकता के साथ निबंधों के विषय के रूप में ग्रहण किया है वह अप्रतिम है। द्विवेदी जी 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में मानव सभ्यता के विकास से लेकर अभी तक के मानवीय विकास को रेखांकित किया है । मनुष्य अपने विकारों के ऊपर एक आवरण डाल देता रहा है। निबंध में एक प्रश्न उठता है कि मनुष्य बार-बार अपने नाखून को काटता है, छोटा करता है फिर वह बार-बार क्यों बढ़ जाता है ? इसके जवाब में चिंतन-मनन करते हुए निबंधकार वहां तक पहुंच जाते हैं जो निश्चित ही मानव सभ्यता के लिए सांकेतिक रूप में एक चेतावनी है। मनुष्य बार-बार अपने केस, नाखून आदि को काटता है, छोटा करता है जो कि उसके सभ्य होने का प्रतीक है। लेकिन वास्तव में मनुष्य का विकास भी प्रकृति के अन्य जीव-जंतुओं की तरह ही हुआ है। अन्य जीव-जंतुओं की तरह ही मनुष्य के शरीर पर केस रहे हैं, उसका नाखून लंबा और तीक्ष्ण रहा है। मनुष्य अपनी सभ्यता के कारण निरंतर इन चीजों से खुद को अलग करता रहा है। मनुष्य के भीतर उसका पशुत्व सदैव विद्यमान रहता है जो अलग-अलग अवसर पर मौका पाते ही जाग उठता है। द्विवेदी जी कहते हैं कि मानव अपनी सभ्यता का परिचय देने के लिए या अपनी पशुता को छुपाने के लिए, अपने हिंसक प्रवृत्ति को छुपाने के लिए खुद को साफ-सुथरा रखता है। अपने नाखून काट-छांट कर रखता है, लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि मनुष्य अपने वास्तविक रूप में पशुओं के समान ही था। वह अपनी हिंसक प्रवृत्ति को दबाए अवश्य रखता है लेकिन वह मौके मौके पर पुनः उभर आता है और मनुष्य को फिर से उसे दबाना पड़ता है। मनुष्य की उन्हीं प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब उसका

नाखून है जो बार-बार बढ़ जाता है और यह संकेत देता है कि मनुष्य के भीतर उसके हिंसक प्रवृत्ति अभी भी विद्यमान है। द्विवेदी जी कहते हैं कि मनुष्य को भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में अन्य वन्य प्राणियों की तरह शिकार के लिए, अपने आहार के लिए नाखूनों की आवश्यकता पड़ती थी। बाद में वह धीरे-धीरे अपने शरीर से बाहर के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करने लगा। वह लकड़ी से शिकार करने लगा। पत्थरों के अस्त्र बनाने लगा। हड्डियों का अस्त्र बनाने लगा। और आगे चलकर जब उसने लोहे का विकास किया तब तो उसके पास एक से एक सूक्ष्म और तीक्ष्ण हथियारों का अंबार लग गया। प्रकृति ने उसे जो नख दिए थे वह उसके लिए अनुपयोगी हो गया, उसे वह काट-छांट कर सुंदर रूप देने लगा।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।